सतीश राठी

ई-मेल-rathisatish1955@gmail.com

टारगेट

बैनर बनवाने के लिए दुकान पर गया था । मुझे मालूम है कि आजकल सड़क के किनारे यदि कोई कार पार्किंग कर देता है तो तुरंत यातायात विभाग की गाड़ियाँ चालान बना देती हैं, अतः मैंने पार्किंग की लाइन के अंदर अपनी कार लगाकर पार्क की और निश्चिंत भाव से अपने काम के लिए चला गया। उस काम में आधा घंटा लगना था, इसलिए मुझे वहीं बैठना पड़ा।

इसी दौरान अचानक लोगों के बोलने की आवाज आई—"अरे-अरे, ट्रेफिक वाली गाड़ी आ गई भाई!" तुरंत लोग बाहर दौड़े।

"अरे, ये क्या?" मैं जब बाहर निकलकर आया तो देखा, मेरी कार के पहिए पर यातायात विभाग की गाड़ी ने लॉक लगा रखा था।

"सर," मैंने जाकर गाड़ी में बैठे प्रभारी सिपाही से बात की, "मेरी गाड़ी तो पार्किंग में खड़ी थी!"

"नहीं, बाहर है।" रूखा-सा उत्तर मिला।

मैंने रोष से कहा, "आप गाड़ी से उतरकर देख लीजिए। मेरी गाड़ी पार्किंग में ही लगी है।"

वे बोले, "आप ₹1000 की रसीद बनवा लें, नहीं तो हम गाड़ी को टोचन करके ले जाएँगे।"

मैंने फिर कहा, "पहले देखिए तो सही, गाड़ी पार्किंग में ही है ।"

"नहीं, आपको अंदर लगाना था!" बिना मेरी ओर देखे उसने कहा।

मैंने कहा, "यह पार्किंग लाइन आपने जो बनाई हुई है, गाड़ी उस पार्किंग लाइन के अंदर है।"

"देखिए, बहस मत कीजिए। यदि हमने कह दिया कि आपकी गाड़ी गलत पार्क है, तो वह गलत पार्क है। आप चालान बनवा लें, नहीं तो हम गाड़ी लेकर जाएँगे।"

मैं किंकर्तव्यविमूढ़ हो गया था। शाम को 6:00 बजे मेरा कार्यक्रम था और अभी बैनर लेकर निकलना ही था। और भी कई सारे काम थे। अभी ये लोग कार लेकर चले गए तो सारे काम अटक जाएँगे। कोर्ट और यातायात थाने के चक्कर लगाने का काम अलग पड़ जाएगा। खैर, ---मरता क्या न करता?"

मैंने बड़े दुखी मन से यातायात अधिकारी को ₹1000 निकालकर दिए और रसीद बनवा ली।

चालान काटते हुए उनके चेहरे पर मुस्कान थी। पड़ोस में बैठे ड्राइवर से उसने कहा, "अरे धीरू, आज तो लगता है, टारगेट जल्दी पूरा हो जाएगा !!!"

सतीश राठी

अभय का भय

घर से बाहर निकलने में अब अभय को डर लगने लगा था। गली में ढेर सारे पागल कुत्ते कब किसका पैर पकड़ लें, कोई भरोसा नहीं। उसके घर के पास के खाली प्लाट पर ढेर सारी झाड़ियाँ उग आई थीं। नगर पालिका को शायद चिंता थी कि जब जंगल कट रहे हैं, तो बेचारे साँप बिच्छू कहाँ जाएँगे। उनके लिए भी खाली प्लाट पर झाड़ियाँ उगाकर उन्हें स्थान तो देना ही पड़ेगा।

अभय यह सब देख रहा था और सोच रहा था कि सत्ता के सामने आम आदमी की औकात कैसे खत्म हो जाती है।

उस दिन क्षेत्र के पार्षद का उसे फोन आ गया, "अभय भाई साहब! आपके घर के पास वाले बगीचे में घास को सेट कर दिया गया है, बगीचे में झूले लग गए हैं, पेड़-पौधे लगा दिए गए हैं, घूमने का ट्रैक बना दिया गया है। इस सबका उद्घाटन करने मंत्री जी आ रहे हैं। आपको भी पधारना है।"

अभय की यह भी औकात नहीं थी कि वह उन्हें अपने घर के आस-पास की समस्या बताकर कह देता कि, भाई साहब ! दरवाजे पर तो साँप-बिच्छू का पहरा है और गली में आवारा कुत्तों का। मैं तो नहीं आ पाऊँगा। राजनीति ने उसे भयग्रस्त कर रखा था। फोन पर हड़बड़ाते हुए अभय ने कहा,"जी भाई साहब! जरूर..... जरूर से आ जाऊँगा।"

सुहागन

धीरे-धीरे दोनों के बीच सब-कुछ टूटने-सा लगा था। कई बार अबोला हो जाता। कई बार वह सोचता कि संबंधों का यह तनाव क्यों बढ़ता जा रहा है। विवाह के दिनों की प्रारंभिक स्थिति अब क्यों नहीं है। क्या बच्चे हो जाने और उनके विवाह हो जाने के बाद माता-पिता का निजी जीवन समाप्त हो जाता है। स्त्री परिवार में ऐसी क्यों घुलमिल जाती है कि अपने पति को भूलने लगती है। उन दोनों के बीच बातें बहुत छोटी-छोटी होतीं, लेकिन विवाद बहुत बड़े-बड़े हो जाते और फिर कई दिनों तक बात ना करना या फिर अलग-अलग सो जाना, यह सब होने लगता। कई बार उसने इसका मनोवैज्ञानिक कारण भी खोजने की कोशिश की। अपने माँ के अंतर्द्वंद पर जब उसने नजदीकी मित्रों से चर्चा की तो पता चला उनके जीवन में भी ऐसा ही हाल चल रहा है। कुल मिलाकर उम्र के इस पड़ाव का दुख जीवन पर हावी होने लगा था। बीमारियाँ घेरने लगी थीं। शरीर कमजोर होने लगा था और अकेलेपन का दुख बढ़ने लगा था। ऐसी ही चिंताओं में कब अटैक आया, यह तो उसे पता ही नहीं चला। कब बेटा उसे लेकर अस्पताल गया, बेहोशी में कुछ ज्ञात नहीं था। जब उसकी आँख खुलीं तो उसने देखा सिरहाने पर बैठी पत्नी दोनों आँखों में आँसू भरे सुबक-सुबक कर रो रही थी। उसे होश में देखकर उसने अपने दोनों हाथों में उसका हाथ ले लिया और कहने लगी, "ऐसे छोड़कर जाने का मन बना रखा है। ध्यान रखना पहले मुझे जाना है सुहागन बनकर। फिर आप जाने की सोचना।"

उसकी भी दोनों आँखों में आँसू आ गए। लगभग हकलाते हुए उसने कहा, “नहीं-नहीं! मैं कहीं नहीं जा रहा।”

इतने दिनों का अवसाद दूर हो गया; पर मन में विचार का प्रश्न अब भी खड़ा था।